छायापुरुष

डिप्लोमा फिल्म

वह ऐसा कौन सा जानवर है, जो सुबह चार पैरों पर, दुपहर में दो, व शाम को तीन पैरों पर चलता है?

'These are plentimaw fishes', it said.'They acquire their goodname from the fact that you have no doubt registered, viz., that they have plenty of maws, i.e., mouths.'

.....

Haroun sighed.
'I don't think I'll ever get the hang of this place.
What do the fish do, anyway?'
Iff replied that the plentimaw fishes were what he called 'hunger artists'- because when they are hungry they swallow stories through every mouth, and in their innards miracles occur; a little bit of one story joins on to an idea from another, and hey presto, then they spew the stories out they are not old tales but new ones. Nothing comes from nothing, thieflet; no story comes comes from nowhere; new stories are born from old-it is the new combination that make them new. So you see our artistic plentimaw fishes really create new stories in their digestive systems.

-Haroun and the sea of stories

Here lies the reader
Who will never open this book.
He is here forever dead.

- Dictionary Of The Khazars.

भी नजर नहीं आ रही है । उपर देखने पर अचानक बुढ़िया प्रकट हो भयानक आवाज के साथ उसको पीछे न मुड़ने को कहती है । विद्याधर पीछे मुड़ता है तो दो बूढ़ी औरतें पानी में खड़ी हो उसकी आँखों में तेज रोशनी फेकती हैं ।

चुंधियाई आँखों से विद्याधर अपने आपको बूढ़े के रुप में पाता है । बूढ़ी औरतें इतनी जोर से हँसती है कि उनके सामने पड़ी काली बत्तखे सफेद हो जाती है । बत्तखों के सफेद होते ही वह छाया के रुप में आ दर्पण पानी में फेंक देती है । पानी दर्पण लेने से मना करता है । दर्पण मछलियों के रुप में वापिस आते है व एक मछली पुस्तक व दूसरी पक्षी बन उड़ जाती है । बालिका विद्याधर को पुस्तक देती है । विद्याधर पेड़ पर लटकी बुढ़िया का लाल आँसू चखता है । पेड़ पुस्तक को वापस बुलाता है । बाँई ओर एक मोर ।

मोर की कहानी :

*बुढ़िया की आवाज में उसकी आज्ञा न मान वह एक पुस्तक बनाने लगा । उसके पास लिखने के पर्याप्त शब्द न थे । इसलिए वह चित्र भी बनाने लगा । चित्र बनाना भी न आता था , तो वह (**He Started Using Real things everying to tell the story**.) पत्थर न लिखना आए तो उसकी जगह वह एक असली पत्थर चिपका देता । पर क्रोधित बुढ़िया के कोप से शब्द परछाई बन उड़ जाते व चित्र अपनी पहली अवस्था में चले जाते ।*

विद्याधर का पुस्तक व शब्द पर से विश्वास उठ जाता है ।

क्षुब्ध पुस्तक सुनाई हुई कहानियाँ वापस बुलाती है ।

(बूढ़ा दरवाजे के पास आ बिल्ली को वापिस बुलाता है । बिल्ली सफेद बत्तख का रुप धारण करती है ।)

छः

पेड़ किताब व किताब पेड़ बन जाती है । किताब में किताब । **Hyperlink to my playback)** किताब पेड़ बन जाती है । पेड़ घूमता है । बालिका पीछे मुड़ देखती है । बुढ़िया पन्ने को वापिस पुस्तक में रखती है ।

बालक पानी में कूदता है ।

बालक कृष्ण बन पानी में कालिया -मर्दन करता है । बाहर आ वह एक बूढ़े का रुप धारण कर बत्तख को पकड़ता है । पुस्तक पेड़ बन जाती है ।

पेड़ फिर घूमता है

(कालिया-मर्दन के लिए **Dada Saheb Phalke** का **footage**)

रास्ता

बूढ़े के शब्दों से बनी कहानी :

कल रात मैनें एक सपना देखा । मैनें देखा मैं एक झील
पार करने के लिए प्रयास कर रहा हूँ । मेरे हाथ में एक किताब है ।
मैं किताब पढता हुआ झील पार करने का प्रयास करता हूँ । जब-जब पानी उछाल मारता तो मै पुस्तक उपर उठा
लेता । तभी एक बूढा सफेद घोड़े से
उतर, पानी पर चल मेरे सामने एक सफेद बत्तख रख वापिस भागता है ।
अचानक मैनें आँख खोल दी और मैनें अपने आपको उसी झील में खडा पाया ।
आँख बंद की तो देखा बूढ़े के मुँह से शब्द फिसल पानी में गिर रहे है ।
पानी छूते ही वो पक्षी बन हवा में उड़ जाते ।आँख खोली तो उसी पक्षी को मैंने उड़ता हुआ पाया ।

पाँच

आखिरकार :

सफेद बत्तख विद्याधर को झील पार कराती है । झील पार करता हुआ विद्याधर अपने अनेकों जन्म याद करता है
।

झील पार कर सफेद बत्तख बालिका बन उसी पेड़ की ओर भागती है ।
विद्याधर उसका पीछा करता है । अंधा उल्लू सब देखता है ।

अंधे उल्लू की कहानी : बूढ़िया कहती है ।

वह रोज घंटो उस रास्ते से जा पेड़ पर लटकी बूढ़िया से कहानियाँ
सुनता रहता ।
कहानियों से उसको लगता उसका सर फूल रहा है और अगर वह यह
कहानियाँ किसी और को न बताएँ तो उसका सर फट कर सौ हिस्सों में बट जाएगा । वह बुढ़िया से यह सब
कहानियाँ एक पुस्तक में दर्ज करने की माँग करता है ।

पेड़ पर लटकी बुढ़िया :

लिख मत । बोल

गोरा

तुम जानती हो मेरी आवाज अन्धा उल्लू
व मेरे शब्द वह काली बत्तख खा गई है ।

विद्याधर, बालिका का पीछा करते हुए । पेड़ के पास पहुँचता है । बालिका कही

गोरा

पता नहीं और बता भी नहीं सकता जब तक वह
जंगल से बाहर न आ जाए ।

छाया

तुम कुछ भी न समझे ।

(The girl will be shot against the earth,boy against water.)

तभी एक सफेद घोड़ा जंगल से बाहर आ पेड़ के
पास रुकता है । पेड़ उसको क्रेन का रुप देता है ।
सूंड उठा वह वापिस जंगल में भाग जाता है ।

गोरा

मैं सब समझ गया ।
बता मेरी आँख का रंग क्या ?

छाया

हरा ।

(क्रेन एक बूढ़े को उठा पानी में रखती है । उसके हाथ में एक सफेद बत्तख है)

गोरा

देख मेरी आँखें नीली ।

(उसके मुंह पर रक्त की लकीर)

क्रेन बूढ़े को पानी में रख देती है ।

पानी पर भागते हुए बूढ़ा झील में खड़े विद्याधर के पास आता है ।
उसके सामने पड़ी काली बत्तख
को सफेद बत्तख से बदल वह वापिस भागता है ।
उसके मुँह से शब्द फिसल कर पानी में गिरते है ।
शब्दों को काली बत्तख आवाज देती है ।

(विद्याधर मोर पर बैठा उड़ जाता है ।)

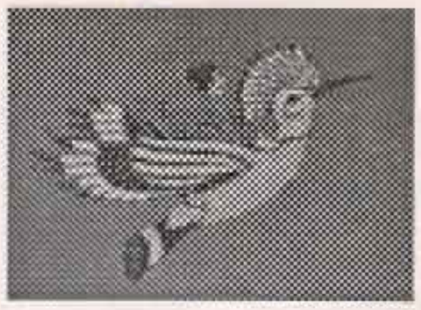

(It should be filmed like if kartikayan flies out of a temple.)

('No bird could fly so fast. is this a machine?)

The Hoopoe fixed him with its glittering eye. 'You maybe have some objection to machines?' It enquired in a loud, booming voice that was identical in every respect to mail coach driver's. And at once it went on; 'But but but you have entrusted your life to me. Then am I not worthy of a little of your respect? Machines also have their sense of self-esteem.)

विद्याधर अपनी कहानी बताता है :

मेरे ~~बहुत~~ बार बोलने पर वो मुझसे लिपट रोई और उसके आँसुओं को चख मुझे पता चला ~~कि वो अंधी है~~ । आलिंगनबध्द हो इस पर विचार कर ही रहा था कि पास वाले जंगल से घोड़े की टाप की आवाज सुनाई दी ।

विद्याधर अपने आपको पत्थर में पाता है ।
बालिका भी वही उसी पत्थर में ।
दोनों यक्ष-यक्षी का रुप ले बात करते है ।

विद्याधरः (बालिका / जोजा) (छाया)

छाया :

(like goddess shadow.)

छाया

क्या यह वही सफेद घोड़ा है । जिसकी टाप की आवाज सुनाई दे रही है ?

वह बत्तख के मुँह में पत्र रखता है तो वह बत्तख
झील पार कर बालिका को दे देती है । पत्र ले वह पेड़ की ओर भागती है ।
घबराया पेड़ उसको तरह-तरह के रुप देता है । (संगीत उभरता है)

(She should run like she has got chocolate, like in some ad films.)

काली । सफेद बत्तख । लड़की । स्त्री । बूढ़ी ।

पेड़ के पास पहुँच वह एक सुंदर स्त्री बन पेड़ को लात मारती है
(पेड़ जगमग करता है)
और बूढी बन भयानक चीख के साथ पेड़ पर लटक जाती है ।

विद्याधर अचानक मोर पर बैठ प्रकट होता है :

(It is not hoopoe but the wooden peacock.)

मैं एक कहानी कहता हूँ . .

प्रेमवश मैं उसको रोज छुप-छुप कर देखता । लेकिन उसने मेरी तरफ कभी देखा ही नहीं ।

एक लड़की अचानक उपर देखती है ।

कैमरा घबरा खिड़की से अंदर आता है ।

घबराया विद्याधर खिड़की की बाई और छुप जाता है ।

गली में एक मछली बेचने वाली, खिलौने व पुरानी किताबें बेचने वाला आदमी ।

हिम्मत कर विद्याधर फिर नीचे देखता है तो टोकरी में पड़ी हुई एक मरी हुई मछली दो पल के लिए जिंदा हो हँसती है ।

कैमरा घबरा कर फिर अंदर घुसता है ।
विद्याधर फिर खिड़की
के पास घुमता है ।

सोचता है -

मछली क्यों हँसी ? — (2)

उसने बुढ़िया को लाल रंग में सने लाल हाथ से मारा तो मछली हँसी ।
तलवार पकड़ जब मैनें सिंह का पीछा किया तो वह नदी पार कर अपनी
लंबी जीभ से मुझे चिढाने लगा । क्रोधित हो मैनें उसकी जीभ काट दी ।
नदी पार करने के लिए मैनें उसी जीभ का पुल बनाया ।
पर मछली क्यों हँसी ?

- उत्तर न जानते हुए भी वो याद करने का अभिनय करता है ।

-
- इतनी लगन से
कि उसको अपना पहला जन्म याद आता है ।

चार

वो विद्याधर न हीं एक कीट था ।

कील से बंधा हुआ गोल-गोल घूमता
हुआ ।

मान्यता

:

अगर एक किडे को धागे से बांध गोल-गोल घूमाया
जाए तो भटका हुआ वापिस आएगा । जैसे-जैसे धागा कील के साथ लिपटता जाएगा .... ठीक वैसे ।

बिजली का खंबा तेज - तेज घूमता है ।

बालिका

लेकिन वो तो कभी रास्ता भूला ही न था ।

(उसने तो चुना था)

और नल-दमयन्ती की तरह-संदेशवाहक वही एक सफेद बत्तख । काले रंग में ।
जो कलयुग में काली हो गई ।

विद्याधर अपने-आपको उसी झील में खड़ा पाता है ।
झील के दोनो छोर एक साथ दिखने लगे ।

उसके उठते ही
विद्याधर उसकी जगह ले रटना आरंभ करता है ।

उसके पीछे तेल का निशान साफ दिखाई देता है ।

<u>एक क्रोधित बुढ़िया</u>

एक क्रोधित बुढ़िया चुपके से आ दरवाजे से एक बिल्ली अंदर फेंकती है।

<u>बुढ़िया</u>

मर परे ।

(वह ऐसा कौन सा जानवर है , जो सुबह चार पैरों पर , दुपहर में दो, व शाम को तीन पैरों पर चलता है ?)

बिल्ली उसी बालिका का रुप धारण कर विद्याधर से अपना स्थान वापिस
माँगती है ।
(She crawls back like a cat.)

विद्याधर उसकी अनदेखा कर पढ़ना जारी रखता है ।

बालिका मुँह उपर उठा उपर देख शिकायत करती है ।
तभी सब कुछ
दिखता है ।

- *ध्यान दे ।*

-

- विद्याधर उन सब में से एकमात्र गोरा ।

-

- मास्टर जी खिड़की से
बाहर देख रहे हैं ।

बालिका की शिकायत को अनसुना कर मुड़ते हैं तो विद्याधर को मास्टर जी एक बेताल की तरह लगे और उसको लगा अगर उसने पहेली का सही-सही उत्तर न दिया तो उसका सर फट सौ हिस्सों में बट जाएगा ।

<u>पहेली : एक</u>

कुछ देर बाद एक बालिका वापिस आ विद्याधर के समाने पड़ी गेंद को उठा खड़ी होती है ।
बालक इसे ओझल होते देखता है और अचानक मुड़ बाई ओर चलता है ।
चलते-चलते वह अपने आपको झील पर खड़ा पाता है।

(नीचे झुक वो समय को अपनी जेब में डाल लेता है ।)

और धीरे-धीरे पानी में समा जाता है ।

एक बालक पानी से बाहर निकल सड़क पार करता है ।

बच्चों के रटने की आवाज संगीत बन उभरती है ।

एक दूनी - दूनी
दो दूनी - चार

बालक पाठशाला की दीवार के सामने प्रकट हो - कान लगा सुनता है ।
उसके दृश्य -अदृश्य होने से पाठशाला की दीवार पर चित्र उभरते हैं ।

नाम : *सब बच्चों में से एकमात्र गोरा । तो यह मान्यता प्रचलित हो गई*
कि उसने शापग्रस्त हो मानव-रुप में जन्म लिया है ।

<u>नाम - विद्याधर</u>

(It is the great god Siva himself who sets up the pedestal (kathapitha) upon which somadeva's dizzyingly complex web of tales is built. The book opens with parvati asking siva to tell her a story that she had never heard before. Siva relates the adventures of the vidyadharas to paravati because the gods were always too happy and mortals were too miserable, whereas the adventures of semi-divine beings were always interesting.")

खिड़की से नीचे झाँकने पर वह देखता है :
- तीन बच्चे रटते हुए ।

बालिका: *एक दूनी - दूनी*
बाकी बच्चे : *एक दूनी - दूनी ।*

बालिका हाथ उठा उपर देखती है ।

संगीत रुकता है ।

'उसके पागलपन का यही एक कारण न था ।'

- भागते हुए बालक अचानक कमल के फूलों से पटी झील में जा गिरता है ।

-

- लेकिन !

-

वह सुंदर , विचित्र बालिका,
कमल के पत्तों पर पैर रख कूदते हुए
झील पार कर जाती है।

उसके हँसने की आवाज सारे वातावरण में ।

अंधा उल्लू उसकी आवाज सुन घबराता है ।

तीन

बुढ़ियां

हाथियों के भी पर थे ।
बादलों की तरह वह आकाशमें . . . .

आकाश से कैमरा नीचे आ देखता है ।
दूर-बहुत दूर कुछ बच्चे खेल रहे है ।

हवा के अलावा उनके खेलने की आवाज ।

एक बालक दूसरे से पूछता है -

अच्छा यह तो बता पाठशाला की दीवार पर चित्र कैसे उभरे ?

बालिका /छाया

सदियों से जमी हुई कहानियाँ - पत्थरों में ।

तभी घंटी की आवाज से बच्चे पेड़ों के झुंड की तरह दाएँ से बाएँ भागते हैं ।

पर बालक अपनी जगह पर खड़ा रह उनको जाते हुए देखता है ।

-

-

जब मैं छोटा था । मैंने देखा दो तितलियों को टकराते हुए ।
पहली तितली के पंख से रंग छिटक दूसरी को लगा ।
और वो उड़ आँखों से ओझल हो गई ।
मैं सब कुछ भूल गया । कल रात किसी ने मुझे कोई और समझ तलवार से वार किया ।
कुछ देर चलने के बाद जब मैनें अपने गाल पर हाथ रखा तो मुझे रक्त की जगह वहीं तितलियों का रंग मिला ।

(एक आदमी के चेहरे पर रक्त की लकीर)

(विद्याधर अपनी यात्रा जारी रखता है ।)

घोंघे का बहुत तेज चलने से कछुआ घबरा पानी में घुस जाता है ।

तो वह बूँद जो इस सारे समय उस हरे पत्ते पर अटकी हुई थी, धीमी गति से नीचे चिटियों का रास्ता खराब करती है ।

- एक हवाई जहाज पहाड़ी के ऊपर से निकलता है ।

-

और बालक को अनुभूति होती है इस सपने रुपी यथार्थ के थमने की ।

- वो इस सब के बारे में सोच ही रहा था कि वह लड़की
(जो चाची जोंजा को परछाई से कहानी सुन रही थी)
प्रकट हो बालक को उसके पीछे न आने का संकेत करती है ।

-

एक गिरगिट जो पेड़ पर लटका हुआ था ।
अपनी आँखों से चिंगारियाँ निकाल झाड़ी को आग लगा
देता है । धूंए और आग में से देखने से वह लड़की धुंधली भी प्रतीत होती है ।

(It will resemble Moses' burning bush: the bush is burning but not getting consumed.)

बालक इस सब की परवाह न करता हुआ उसके पीछे भागता है ।
पक्षी चिल्लाते हुए पेड़ों पर से भाग खड़े होते हैं ।

' पर एक अंधा उल्लू इस घटना का एकमात्र गवाह ।'

<u>उल्लू की गवाही:</u>

आने वाले सात दिनों को जान वह अपनी सुविधा अनुसार किसी भी दिन
को किसी और दिन से बदल देता । पर दिनों के जोड़ ठीक से न बैठे ।
उन जोड़ों के बीच वाले अंधकार में एक अलग समय ने जन्म लिया ।

दो

दूसरा रास्ता
पहले जैसा

बालक के **adventures** ।

कुछ भी नया नहीं । सब कुछ पहले जैसा

<u>लेकिन</u> :

चीटी पेड़ पर चलती है ।

गिरगिट रंग बदल चट्टान पर से भाग खड़ा होता है ।

ला.....ला.....ला.....

हरा पत्ता एक बूंद को पकड़े हुए ।

धरती से अचानक एक पौधा जन्म लेता है

तो
तो

नीले पानी पर जमी हरी काई का जमाव एक मेंढक का डर कर अंदर
कूदने से फटता है ।

-

- *बहुत दिनों पहले . .*

-

(बालक अपने एक दोस्त को कहानी बोलता है तो बरगद के गीले तने पर
हरी काई जन्म लेती है । कुछ ही पलों पहले बालक अपना हाथ ठीक
उसी जगह पर रखा था ।)

- बालक अपनी कहानी ज़ारी रखता है ।

- (दो तितलियाँ लड़ते हुए)

काला

ओए गोरे किताब खोल

गोरा अपने बस्ते में पड़ी सब चीजें खोल कर दिखाता है ।

(This is another act of defiance. He should show these things like he is getting naked to shock someone. Like some children shock adults by showing their genitals.)

पीछे दो आदमी अपना - अपना जीवन चक्र पूरा करते हैं ।

गोरा

अच्छा, चलता हूं ।

(cellphone will turn into a snake)

गोरे की किताब में टाफिया (हाथी, मोर)

काला

जाएगा कहां यह तो चक्करों में पड़ गया है

गोरा चौंक में ही गोल-गोल घूमता रहता है ।

वह छायापुरुष बन जाता है ।

(He is like "the elder" in Dostoveskey's The Brother's Karamazov.)

गोरा

(दूर से)

फिक्र मत करों मुझे इस दुनिया में रहना ही नहीं

(तभी एक गिरगिट अपना मुंह काला कर उसकी इच्छा पूरी करता है ।)

बालक खिड़की से दरवाजे से खिड़की पार करता हुआ जाता है ।

(I will show his journey through windows and doors.He will run but not move.)

काले की दूकान

गोरा काले की दूकान के सामने रुकता है । बाकी सब लोग **Slow shutter speed** में चलते रहेंगे ।

(He is too self absorbed to notice anyone else.)

काले की किराने की दुकान

काला

के देआ ?

(क्या दूं ?)

गोरा

इक्क हाथी ते इक्क मोर

(एक हाथी और एक मोर)

काला पहले किसी से बात कर रहा था जो खांसते हुए अपनी छुटी हुई बात करता है ।

तीसरा आदमी

साधू ते चोर

चौथा आदमी

(अपनी गर्दन हिलाते हुए)

- हां -- हां -- हां --

(फुसफुसा कर)

बिजली का खंबा पार करते ही

जान में जान आती ।

(जादूई बीज भी काम में न आया)

<u>उस दिन :</u>

अचानक बीज कुछ ही पल में पौधा बन फूल को सहलाने लगा ।

(दादा साहब फाळके अपनी पहली फिल्म बनाता है - मटर के दाने का विकास)

(As the original footage is not available we will use the stock footage from any film.)

रेडियो से खबरे प्रसारित हो उल्लू से जगह बदलने को कहती है ।

<u>माँ का सपना :</u>

सुबह / बाहर

(The boy will open the door and he will find the Jangams singing.)

पक्षियों के चहचहाने की आवाज

पिताजी फूल को पानी दे रहे है ।

पिता जी सामने देख रहे है ।

पिताजी वाला फूल खिड़की वाले फूल को फुसफुसा कर बोलता है ।

'' आज वो दूसरा रास्ता चुनेगा । ''

दो

सोती हुई माँ के हाथों पर

दो आँखे रख वो भागा तो

माँ ने उन्हीं आँखों से सपने

में देखा - उसका बच्चा ही उसका पती ।

गुस्से में आ वो उसके पाले हुए फूल

को तोड़ बालों में ~~लग्न लेती~~ है ।
लगाती

(This is the second act of defiance.)

मेंहदी लगे हाथ पर दो पत्थर की आँखें उपजेगी ।

माँ पलके बंद करती है ।

पलकों पर पत्थर की आँखे जन्म लेती है ।

(गोरा यह पत्थर की आँखें उल्लू से चूराता है । बदले में उल्लू उससे उसकी आवाज छीन लेगा ।)

पहले

बूढी - *पहले तो वह उसे भ्रम अथवा आँख की खराबी मान अनदेखा करता रहा ।*

A Proposition:

'There was a young lady named Bright
Whose speed was far faster than light
She went out one day
In a relative way
And returned the previous night.'

-- George Gammow

बालक : *पहले तो मैं इसे भ्रम अथवा आँख की खराबी मान सीधा चलता- नाक की सीध में । कुछ देर चलने के बाद हवा में उठा हुआ रास्ता धरती में आ मिलता ।*

"समस्त आज्ञाओं का निरादर कर विद्याधर किसी और रास्ते से पाठशाला जाने लगा कुछ दिनों बाद रास्ता अपना रास्ता बदल हवा में उठ खड़ा हुआ ।"

**(This road should depict a child returning from school.
Therefore it has to be extremely bright, afternoon road (like in north India) but I may not like the look of it, therefore it will be beautiful, dark and strange.)**

हज़ारों औरतें गा उठती है ।

पानी में उतरी दो बूढी औरतें अपने अपने सूर्य को मनाने का प्रयत्न करेगी ।

मान्यता:

हर औरत अगर अपने-अपने सूर्य को मनाए तो बारिश होगी ।

**(Showing two old women reflecting sunrays through two mirrors onto the camera lens will depict this belief. Now if we use special filters they may form beautiful rainbows.
The old women are standing on water.
Two black ducks will be thrown inside the water.
Later they will become white.)**

तेज, सफेद प्रकाश तूफान में बदल विद्याधर की खिड़की खोलता है ।

गहरी नींद में सोया हुआ वह उठ खड़ा होता है ।

खिड़की पर बिना फूल का गमला ।

पालतू उल्लू पास ~~रहते~~ रखे हुए रेडियो की ओर देखता है ।

(The owl will sit on the top of the radio.)

पास पड़ी पुस्तक से शब्द परछाई बन, उड़कर खिड़की से बाहर आते है ।

(Although I have depicted this in one of my earlier exercise but right now I do not have any idea how to shoot It. The cinematographer will decode this.)

(I will intercut this with the footage of Dada Saheb Phalke's film on 'how to make a film.')

यह सब एक घर में:

(बालक इस**TV** के दाहिने ओर खड़ा है। वह कहानी सुनने की मांग करता है। बुढ़िया **TV** में से निकल आती है । तभी बाहर से कोई सफेद बत्तख फेंकता है जो कि बुढ़िया की परछाई बन उसके किताब में से निकले शब्दों को पकड़ती है। किताब में से पन्ने निकल हवा में उड़े हैं तो बुढ़िया की परछाई (बालिका) वह पन्ने पकड़ लेती है।)

" *पुस्तक से शब्द जब परछाई बन कहानी कहने लगे तो विद्याधर (जो बाद में '' गोरा '' के नाम से जाना जाएगा) की निद्रा टूटी ।*"

बालक कैमरा की तरफ मुड़ पिस्तौल से गोली चलाता है ।

(He lifts up his robe and draws a pistol ... I don't know if he draws it from a gunbelt or from his unconscious- ***Alejandro Zodowrskey)***

स्क्रीन लाल हो जाती है ।
टाइटल्स आते हैं ।

भारतीय एवं फिल्म टेलीविजन संस्थान
प्रस्तुत करता है

छायापुरुष

एक

आखिर चाची जौजा को सब पता कैसे चल जाता है ?

पुस्तक से शब्द जब परछाई बन दीवार पर कहानी कहने लगे तो बालक की निद्रा टूटी।

(कौन बोली ?)

शब्द / अक्षर - पहेली का उत्तर :
पहेली अथवा कहानी।

बुढिया बोल उठती है । रास्ता । थोड़ी देर एकटकी बांध देखने से ही पता चलता है । रास्ता धीरे-धीरे उपर उठता है ।
आखिरकार बुढ़िया बोल उठी

प्रथम

Black and White

(काला / गोरा)

छत के ऐंटीने पर बैठे काले कौए ने कॉ बोला

कौआ

काँ ----(ऑ----ऑ-----ऑ---)

(हम कॉ को खींचते हैं तो कैमरा नीचे गिरता है ।)

कॉ उसके मुह से फिसल आँगन के बीचो-बीच खुदे पानी के हौद में जा गिरा । उस कॉ को खा कर एक मछली अपना सफेद रंग छोड़ काली हो गई ।

(Scratch animation - एक सफेद मछली धीरे - धीरे काली होती है ।)

इस प्रक्रिया को दोहराने से **B & W television** का जन्म हुआ ।

(तभी कैमरा बहुत तेजी से आँगन में खुदे पानी के हौद में जा गिरता है)

छपाक की आवाज के साथ ब्लॅक एण्ड व्हाईट स्क्रीन **Voltage** कम होने के कारण पानी जैसे हिलती है । टाइटल्स आते हैं ।

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान प्रस्तुत करता है

<u>मसान</u>

(This is the First act of defiance. Illusion.)

स्क्रीन पर कुछ शॉटस् आते हैं ;

तोता हिलता हुआ । बच्ची पीछे मुड़ कर देखती है । बुढ़िया किताब में से निकलते पन्नों को वापिस पुस्तक में रखने का प्रयास करती हुई ।

(These shots are from my previous film, which I could not complete...)

छायापुरुष

डिप्लोमा फिल्म

कथा, पटकथा, संवाद	अमित दत्ता
छायांकन	सोमक मुखर्जी
संकलन	राजेश शेरा

हजार कथाओं पर आधारित एक कथा

कुछ कहानियाँ

सोमदेव की कथासरितसागर व मिलॉर्द पेविच की "डिक्शनरी ऑफ द खज़ारस'

(**Dictionary Of The Khazaras**) से ली गई हैं ।

जो सोचता है

बकता है ।

उसका बकना

एक शैली बन जाता है।

विद्याधर अपने कमरे में बैठा हुआ पन्ने वापिस पुस्तक में डालने का असफल प्रयास करता है । (रेडिओ की आवाज) थोड़ी देर बाद वह थक कर सो जाता है । पृष्ठ हवा में लटके हुए हैं । दो पक्षी व दो बूढ़ी औरते फूसफूसा कर बात करते है ।

दो बूढ़ी औरते

शत्रुओं से बचाने के लिए अंधे ब्राह्मण उसकी पलकों पर ऐसे अक्षर लिख देते जिसे पढ़ते ही मृत्यू हो जाए । सोते हुए उसे मारना असंभव था ।

पर जब वह अपने विचारों व वस्त्रों से थक गई तो उसको दो दर्पण उपहार में मिले । दर्पण नमक से बने हुए थे । एक दर्पण तेज़ व दूसरा धीमा ।

धीमा कुछ पल पहले की परछाई दिखाता और तेज़ कुछ कुछ पल बाद वाली ।

एक दिन राजकुमारी ने बिना आँखें धोये धीमे दर्पण में देखा तो तेज दर्पण ने उसकी मृत्यू दिखाई ।

(उसने वह अक्षर खुद ही पढ़ लिए थे ।)

एक बुढिया हंसते हुए काला कौआ बन वापिस एंटीने पर बैठ जाती है । दूसरी बुढ़िया पुस्तकालय से पुस्तक चुराती है ।

चुराई हुई पुस्तक पढ़ते हुए वह अपनी आँखें खो देती है ।

दो पत्थर की आँखें धीमी गति से पुस्तक पर गिरती हैं।

समाप्त